

Im Besondern *a)* eines der Weltgebiete: दिवो वा पार्थिवो वा मृत्तो वा रजसः RV. 1, 6, 10. 149, 4. दिवि तपसा रजसः पृथिव्याम् 7, 64, 1. पार्थिवम्, रजः, दिवः सदासि VS. 34, 32. दिवो रजसः पृथिव्याः VĀLAKH. 9, 3. या धृ-  
 तारा रजसो रोचनस्योतादित्या दिव्या पार्थिवस्य RV. 5, 69, 4. 54, 4. 6, 7, 7. पार्थिवानि, रजसि 31, 2. पार्थिवान्युह रजो अक्षरिन्तम् 61, 11. वीन्द्र या-  
 सि दिव्यानि रोचना वि पार्थिवानि रजसा 10, 32, 2. 149, 2. AV. 13, 1, 7, 4, 1, 4. — *β)* irdischer und himmlischer Dunstkreis; in manchen der folgenden Stellen kann aber पार्थिव als subst. gefasst werden: Erdenraum; vgl. die Stellen unter *a)*. आ पत्रो पार्थिवं रजो बद्धे रोचना दिवि RV. 1, 81, 5. 90, 7. 9, 72, 8. न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवम् 8, 77, 5. 1, 154, 1. 6, 49, 3. ये पार्थिवे रजस्या निर्घताः 10, 15, 2. आ प्रा रजसि दिव्यानि पार्थिवा 4, 53, 3. ऋभवा वासमरुन्दिवा रजः 1, 110, 6. — *γ)* drei Dunstkreise: अक्षरि-  
 तम्, त्री रजसि, त्रीणि रोचना RV. 4, 53, 5. je drei रोचना, द्यावः, रजसि 5, 69, 1. AV. 13, 3, 21. तृतीये रजसि RV. 10, 43, 3. 123, 8. 9, 74, 6. AV. 13, 1, 11. sechs RV. 1, 164, 6. — *δ)* du. die untere und die obere Region (über der Erde) NAIGH. 3, 30. RV. 1, 160, 4. विवर्षती रजसी समते 7, 80, 1. उभे ते विवा रजसी 99, 1. मृत्तौ अपरे रजसो विवेर्विदत् 9, 68, 3. अरुश्च कृष्ण-  
 मरुर्जुने च वि वर्तते रजसी वेद्याभिः 6, 9, 1. हूतो देवानां रजसो समी-  
 यते 13, 9. 4, 42, 3. 6. उर्वो गभीरे रजसी सुमेके अवंशे धीरः शच्या समैरत् 56, 3. — *ε)* die obere und untere Grenze des Dunstkreises (पार und बुध्नः) (त्वमेतान्) अयोधयो रजस इन्द्र पारे RV. 1, 33, 7. तपसमस्य रजसः पराके 7, 100, 5. यो अय पारे रजसो विवेष 10, 27, 7. हूरे पारे रजसो रो-  
 चनाकरम् 49, 6. या सिद्धं रजसः पारे अघनः VĀLAKH. 11, 2. अपो वृवी रजसो बुध्नमशयत् RV. 1, 32, 6. तं देवा बुध्रे रजसः सुदसं दिवस्पृथिव्यार-  
 रतिं न्यैरिरे 2, 2, 3. 4, 1, 11. 17, 14. अतो 5, 47, 3. पूर्वे अर्थे 1, 92, 7. 124, 5. — *ζ)* रजसस्पतिः RV. 7, 35, 5 nach Śi. Indra. — *b)* Dust, Nebel; Dusterkeit, Dunkel (vgl. ἀνί); = रात्रि NAIGH. 1, 7. आ कृष्णे रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमत् मर्त्यं च RV. 1, 33, 2. 4. ज्ञाङ्गं सुगेभिर्क्तमृच्छू रजोभिः im Dunkel 116, 20. 6, 62, 6. रथस्य भानुं हेरुचू रजोभिः 2. रजस्तमो मोय गाः AV. 8, 2, 1. पार्यामि त्वा रजस उवा मृत्योरपीपरम् 9. कृतमानु-  
 द्यन्सहमानो रजसि विश्वा अदित्य प्रवतो वि भासि 13, 2, 28. सूर्यस्य चतू रजसैत्यावृतम् RV. 1, 164, 14. सूर्यो न चतू रजसो विसर्जने 5, 59, 3. पूत्रणि चिन्वि तताना रजसि 10, 111, 4. ततुं तन्वन्नरसो भानुमन्विक्त्वि vom  
 Dunst zum Licht 33, 6. धूमेनाग्नी रजसा च मध्यमः Nir. 12, 26. — *c)* Dunst, Staub (AK. 2, 8, 2, 66. 3, 4, 2, 22. H. 970. MED. s. 30. fg. HALĀ. 2, 288); Unreinigkeit, kleine Partikeln irgend eines Stoffes: कृष्णा रजसि पत्सुतः प्रयाणे ज्ञातवैदसः RV. 8, 43, 6. यस्या वातो मातरि श्येते रजसि कृपवन् AV. 12, 1, 51. अश्वं रजो बुध्वे वि तां जनां 57, 10, 1, 32. रजः स्पर्श मे-  
 द्यम् M. 8, 133. 11, 110. पार्थिवं रजः MBH. 1, 6021. R. 1, 28, 14. 2, 33, 19. प्रशशाम महीरजः 40, 33. 72, 31. 3, 76, 33. 4, 39, 9. रजोध्माकुला दिशः  
 SUÇR. 1, 22, 2. 118, 5. रजःकाण RAGH. 1, 85. VARĀH. BRH. S. 3, 9. 38. 9, 41. 16, 40. 30, 2. धूताधरजस् adj. KATHĀS. 18, 113. 244. PRAB. 77, 9. BHĀG. P. 3, 17, 5. 4, 3, 7. रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैः RAGH. 1, 42. 4, 29. 6, 33. 12, 82. ÇĀK. 8. Spr. 2700. 2816. PAÑĀR. 1, 14, 100. अयो° KAUC. 8. मलयज° Spr. 3268. Staubkörnchen: जलात्तरगते भानो यत्सूत्रं दृश्यते रजः । प्रथमं तत्प्रमा-  
 णानां त्रसरेणुं प्रचक्षते ॥ M. 8, 132. JĀĀN. 1, 361. VARĀH. BRH. S. 58, 1. 2. Ind. St. 8, 436. यः पार्थिवान्यपि कविर्विममे रजसि BHĀG. P. 2, 7, 40. 8, 23, 19. Vgl. लोक्°. — *d)* Blütenstaub MED. सुमनो° AK. 2, 4, 1, 17.

पद्मपुष्प° R. 3, 79, 29. MEGH. 34. 66. ÇĀK. 86. 131. VIKR. 26. MĀLAV. 44. BHĀG. P. 4, 24, 22. अजात° adj. Spr. 133. — *e)* das Staubige d. i. das aufgerissene und bebaute Land: उन्नत्यस्मै मरुतो क्तिता इव पुत्र रजसि पर्यसा मयोभुवः RV. 1, 166, 3. धृतेर्गव्यूतिमुनत् मघा रजसि 3, 62, 16. परि-  
 अयोसि भरते रजसि sie fährt über die Flächen, die Felder 10, 75, 7. — *f)* die menses (eig. Unreinigkeit) Nir. 4, 19. AK. 2, 6, 1, 21. 3, 4, 20, 233. H. 536. MED. अरजोविता कुमारी KAUC. 37. GRHJASAMGR. 2, 31. SUÇR. 1, 30, 16. रसादेव स्त्रिया रक्तं रजःसंज्ञं प्रवर्तते 43, 10. 44, 18. रजसाभिस्तो नारिम् M. 4, 41. रजसा समभिस्तताम् 42. रजस्पुपते 3, 66. 108. रजसाभि-  
 परिस्तता MBH. 3, 523. असंप्रातरजा गौरी प्राप्ते रजसि रोहिणी Spr. 282. 2907. VARĀH. BRH. S. 74, 9. अजात° adj. Spr. 133. अद्रष्ट° HALĀ. 2, 329. — *g)* in der Philosophie die mittlere der drei Qualitäten (सत्त्व, रजस् oder तेजस् und तमस्), die den Geist verdüsternde Leidenschaft (wobei an रज्, रज्ज्, राग angeknüpft wird) AK. 1, 1, 4, 7. 3, 4, 20, 233. MED. MAITREJUP. 3, 2. M. 12, 24. रागद्वेषो रजः स्मृतम् 26. यतु डःखसमायुक्तम-  
 प्रोतिकरमात्मनः । तद्रजो ऽप्रतिघं विद्यात् 28. तमसो लक्षणां कामो रज-  
 सस्त्वर्थ उच्यते । सत्त्वस्य लक्षणां धर्मः 38. काम एष कोष एष रजोगुणसमु-  
 द्भवः 3, 37. SĀMĀKHAJAK. 13. 54. MADHUS. in Ind. St. 1, 23, 17. SUÇR. 1, 81, 7. 2, 537, 18. VARĀH. BRH. S. 66, 9. BRH. 2, 7. WEBER, RĀMAT. UP. 289. 324. BHĀG. P. 3, 8, 13. रजोऽधिकं in dem das Rağas vorherrscht VARĀH. BRH. S. 69, 8. Leidenschaft überh. MBH. 3, 1086. शात° adj. BHĀG. 6, 27. रजो-  
 विरिक्तमनाः शशास RAGH. 14, 85. अतर्गतमपास्तं मे रजसो ऽपि परं तमः  
 KUMĀRAS. 6, 60. KATHĀS. 20, 128. BHĀG. P. 3, 13, 20. रोषरजोभिः (zugleich Staub) Spr. 2816. — *h)* Zinn H. ç. 139 (kein Fehler st. रज्ज्, da dieses im Text sich findet). — *i)* = योतिस्, उदक, लोक, अरुन् Nir. 4, 19. —  
 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha VP. 83. — Vgl. अ°, दत्त°, नी°, परो°, पाद°, पुष्प°, भृङ्ग°, मही°, वि°, स°, राजस.  
 रजसं (von रजस्) adj. trübe, dunkel: नियाण AV. 8, 2, 10. etwa unrein, schmutzig 11, 2, 25. — Am Ende eines adj. comp. = रजस् in अजात-  
 रजसा die menses noch nicht habend GRHJASAMGR. 2, 28.  
 रजसानु m. 1) Wolke. — 2) Geist, Herz (चित्त) UṆLĀK. im ÇKDra.  
 रजस्क am Ende eines adj. comp. von रजस् in नी° und वि°.  
 रजस्तमस्क adj. von den Qualitäten रजस् und तमस् beherrscht: असुराः  
 BHĀG. P. 7, 1, 11.  
 रजस्तमोमय adj. die Natur der Qualitäten रजस् und तमस् habend  
 MĀRK. P. 68, 28. 41.  
 रजस्तुर adj. durch den Dunstkreis kommend, die Lüfte durchziehend  
 RV. 1, 64, 12. 6, 2, 2. 66, 7. 9, 48, 4. 108, 7.  
 रजस्तोक m. n. das Kind (तोक) der Leidenschaft d. i. die Habsucht  
 BHĀG. P. 12, 8, 16. 25. — Vgl. रजःपुत्र.  
 रजस्य (von रजस्), रजस्यति zu Staub werden, zerrieben GAṆARATNAM.  
 im gaṇa काण्डादि zu P. 3, 1, 27.  
 रजस्यं (wie eben) adj. dunstig oder staubig VS. 16, 45.  
 रजस्वल् (wie eben) P. 5, 2, 112. VOP. 7, 32. 1) adj. (f. स्त्री) a) bestäubt,  
 mit Staub erfüllt MBH. 7, 1454. 8896. 9, 1370. BHĀG. P. 7, 13, 12. रजस्व-  
 लान्त 5, 13, 4. 14, 9. — *b)* f. die menses habend, eine Frau während der  
 menses VOP. 7, 33. AK. 2, 6, 1, 20. H. 534. MED. 1. 162. HALĀ. 2, 333. GOBH. 3, 3, 3. ÇĀNKH. GRHJ. 2, 12. 6, 1. M. 3, 239. 5, 66. JĀĀN. 3, 229. MBH.